श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 1 वर्ष, अंक 53, पृष्ठ 4, मूल्य 1.00

अखण्ड भारत सन्देश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज सोमवार, 28 सितम्बर, 2020

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट

फिर पलटी मुंबई से आ रही यूपी पुलिस की गाड़ी, गैंगस्टर की मौत

गुना, राज्य ब्यूरो। मुंबई से एक गैंगस्टर को गिरफ्तार कर लखनऊ ले जा रही यूपी पुलिस की निजी गाड़ी मप्र के गुना जिले में पाखरिया पुरा टोल के पास रविवार सुबह पलट गई। आरोपित फिरोज अली की हादसे में मौके पर मौत हो गई, जबकि एक सब इंस्पेक्टर व सिपाही समेत चार लोग घायल हो गए। घायलों को ब्यावरा अस्पताल में भर्ती कराया गया है। ठीक ऐसे ही 10 पुलिसकर्मियों की हत्या का आरोपी विकास दुबे को उज्जैन से लाते समय कानपुर से पहले यूपी पुलिस की गाड़ी पलट गई थी। बाद में घटनास्थल से भागते समय विकास दुबे का पुलिस ने एनकाउंटर कर दिया था। इसमें

कई पुलिसकर्मी घायल हो गए थे। इस घटना ने विकास दुबे कांड को फिर से याद दिला दिया।

पुलिस के अनुसार, 58 वर्षीय फिरोज उर्फ शमी बहराइच जिले के थाना कोतवाली के दरगाह शरीफ घंटाघर का रहने वाला था। लखनऊ के ठाकुरगंज थाने में वर्ष 2014 में उसके खिलाफ गैंगस्टर एक्ट के तहत मामला दर्ज था। तभी से वह फरार था। उसे गिरफ्तार करने के लिए सब इंस्पेक्टर जगदीश प्रसाद पाण्डेय, कांस्टेबल संजीव सिंह और आरोपित के साढ़ू भाई अफजल पुत्र मुन्ना खान निवासी लखनऊ के साथ मुंबई गए थे।

फिरोज मुंबई के नाला सोपारा इलाके की झुग्गी बस्ती में रह रहा था। मुंबई से फिरोज की गिरफ्तारी के बाद पुलिस टीम शनिवार को लखनऊ के लिए रवाना हुई। रविवार सुबह साढ़े छह बजे हादसा हो गया। हादसे में फिरोज की मौत हो गई। अफजल खान का हाथ फ्रैक्चर हुआ है। पुलिसकर्मी संजीव, जगदीश प्रसाद व वाहन चालक सुलभ मिश्रा को भी चोटें आई हैं। जगदीश प्रसाद ने गुना के पुलिस अधिकारियों को बताया कि सड़क पर अचानक गाय सामने आ गई थी। उसे बचाने में वाहन पलट गया। यह भी आशंका जताई जा रही है कि चालक को झपकी आने के कारण हादसा हुआ है।

गुना के पुलिस अधीक्षक राजेश कुमार सिंह ने कहा कि वाहन पलटने से उसमें सवार आरोपित की मौत हो गई है। पुलिसकर्मियों समेत अन्य लोग घायल हुए हैं। मामले की न्यायिक जांच के लिए जिला एवं सत्र न्यायाधीश से निवेदन किया गया है।

केंद्रीय सतर्कता आयोग ने कहा- भ्रष्टाचार से जुड़ी छद्म शिकायतों पर नहीं करें कार्रवाई

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) ने सभी सरकारी विभागों से कहा है कि भ्रष्टाचार को लेकर की जाने वाली छद्म, गुमनाम शिकायतों पर ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए। आयोग ने कहा कि इस संबंध में दिशानिर्देश के उल्लंघन को गंभीरता से लिया जाएगा। आयोग की तरफ से इस तरह का निर्देश उन दृष्टांतों के मद्देनजर जारी किया गया जिनमें देखा गया कि सरकारी विभाग या संगठन कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग ([डीओपीटी)] तथा सीवीसी की तरफ से जारी निदेर्शों का उल्लंघन कर छद्म शिकायतों का भी संज्ञान ले रहे हैं। सीवीसी ने कहा कि सरकार के निदेर्शों के उल्लंघन को गंभीरता से लिया जाएगा। आयोग ने अपने निर्देश में कहा कि सभी प्रमुख सतर्कता और प्रशासनिक अधिकारियों को उसके निदेर्शों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित कराना चाहिए। डीओपीटी तथा सीवीसी ने पहले के आदेश में यह कहा है कि मंत्रालयों, विभागों तथा संगठनों को गुमनाम अथवा छद्म नामों से की जानेवाली शिकायतों पर कोई कार्रवाई नहीं करनी चाहिए।

देश के पर्यटन स्थल ग्रीन जोन होंगे घोषित इको-फ्रेंडली फ्यूल वाली गाड़ियां ही चलें

नई दिल्ली, प्रेट्र। केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर पर्यटन स्थलों और ऐतिहासिक स्थलों की पहचान बतौर ग्रीन जोन करने का आश्वासन दिया। इन स्थलों पर केवल इको-फ्रेंडली फ्यूल वाली गाड़ियां ही जा सकेंगी। उन्होंने बताया कि यह प्रस्तावित प्रोजेक्ट पर पर्यटन और पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्रालय संयुक्त रूप से काम करेंगे।

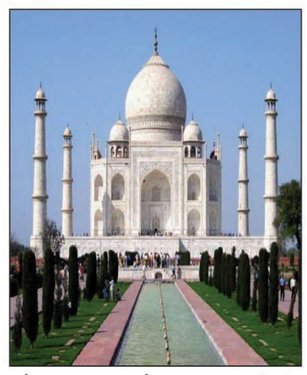

धर्मेंद्र प्रधान ने रविवार को कहा कि दोनों मंत्रालय के सचिवों के संयुक्त प्रयासों से इसे अंजाम दिया जाएगा। पर्यटन मंत्रालय के ओर से पहले से चुने गए देश के सौ पर्यटन स्थलों में से ही इसका चुनाव करना होगा। इन चयनित स्थलों के क्षेत्रों को पूरी तरह से ग्रीन जोन में बदल दिया जाएगा। इस दौरान प्रधान ने 'साथी' (सिस्टम फॉर एसेस्मेंट, अवेयरनेस एंड ट्रेनिंग) नाम की एक और पहल की है। यह पर्यटकों के लिए कोविड-19 के संक्रमण काल में सुरक्षित पर्यटन की व्यवस्था करेगा। उन्होंने कहा कि पर्यटन उद्योग को इस वैश्विक महामारी के दौर में कोरोना संक्रमण से बचाव के सभी नियमों का पालन करना होगा। लोगों में इसके प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए युद्धस्तर पर प्रयास करने होंगे।

एनजीटी ने राज्यों को सीवेज शोधन संयंत्रों की संख्या बढ़ाने के दिए निर्देश

नई दिल्ली, एएनआइ। देश में पैदा हो रहे मैले के हानिकारक तत्वों को निष्प्रभावी बनाने के लिए एनजीटी ने सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को ट्रीटमेंट प्लांटों की संख्या बढ़ाने के निर्देश दिए हैं। इस समय मल-मूत्र के शोधन के लिए देश में आवश्यकता से बहुत कम ट्रीटमेंट प्लांट हैं और जो हैं वे आबादी के अनुसार कम क्षमता वाले हैं। एनजीटी ने बिना शोधन के नदियों और समुद्र में बहाए जा रहे मैले को भी एक महीने के भीतर रोकने के निर्देश दिए हैं। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) के प्रमुख आदर्श कुमार गोयल की अध्यक्षता वाली पीठ ने पाया कि पर्याप्त संख्या में सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) स्थापित करने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने 31 मार्च, 2018 तक का जो समय निर्धारित किया था, वह काफी पहले निकल चुका है। उस आदेश में शीर्ष न्यायालय ने राज्य प्रदूषण बोर्ड को निर्देश दिया था कि वह राज्य प्रशासन के साथ तालमेल बनाकर एसटीपी स्थापित करवाए। इस सिलसिले में एनजीटी ने भी कई आदेश दिए। इनमें केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के जरिये मुआवजे की व्यवस्था करने का निर्देश भी दिया गया था। एनजीटी ने यह भी निर्देश दिया था कि चालू एसटीपी की क्षमता में विस्तार कर उन्हें आवश्यकतानुसार बनाया जाए। लेकिन वह भी क्रियान्वित नहीं हो पाया।

एनजीटी ने अपने आदेश में साफ कहा है कि राज्य और केंद्रशासित प्रदेश सुनिश्चित करें कि किसी भी स्थिति में बिना शोधन के सीवेज नदी, तालाबों या समुद्र में न गिराया जाए। क्योंकि इससे पर्यावरण को घातक नुकसान होता है। इसके लिए प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को कानूनी प्रावधानों के अनुसार सख्त कार्रवाई करने के लिए कहा गया है।

एनजीटी ने कहा कि जहां कहीं भी सीवेज ट्रीटमेंट की कार्ययोजना अमल में नहीं लाई जा रही है और बिना शोधन के सीवेज नदियों या समुद्र में बहाया जा रहा है, वह एक महीने के भीतर हर हाल में रोका जाए। इसके लिए नदी-समुद्र जीर्णोद्धार कमेटियां गठित होंगी और कार्यो पर नजर रखेंगी। इसके लिए धन का इंतजाम सुप्रीम कोर्ट के दिशानिर्देशों के मुताबिक किया जाए।

खुदाई में निकले होलकरकालीन 2484 चांदी के सिक्के

बड़वानी, राज्य ब्यूरो। मध्य प्रदेश के बड़वानी जिला मुख्यालय पर नीमा समाज के इंद्र परिसर भवन के समीप हुई खुदाई में आठ अगस्त को चांदी के सिक्कों से भरा तांबे का घड़ा निकला था। इसे खोदाई कार्य करवा रहे ठेकेदार ने अपने पास रख लिया। सूचना पर पुलिस ने ठेकेदार 42 वर्षीय कैलाश पुत्र रणछोड़ धनगर को हिरासत में लेकर सख्ती से पूछताछ की तो उसने यह बात स्वीकार कर ली। पुलिस ने उसके पास से होलकरकालीन 2484 चांदी के सिक्के जब्त किए हैं। इनका वजन 27 किलो 300 ग्राम है। पुलिस ने इनकी अनुमानित कीमत करीब 14 लाख रपये बताई है। रविवार को पुलिस कंट्रोल रूम में एसडीओपी रूपरेखा यादव ने यह जानकारी दी। टीआई राजेश यादव ने बताया कि ठेकेदार से पूछताछ की गई तो पहले वह पुलिस को गुमराह करता रहा। उसके घर से बरामद तांबे के घड़े पर 'श्री ओंकार महाराज की बजुका सं 1880' अंकित है। घड़े से फारसी भाषा अंकित चांदी के 2484 सिक्के जब्त किए गए। कैलाश द्वारा इस बात की जानकारी प्रशासन को नहीं देते हुए सिक्के स्वयं के घर में छुपाकर रखने पर उसके खिलाफ कार्रवाई की गई।

उनके चुनाव लड़ने पर लगे रोक जिनके खिलाफ गंभीर अपराध के मामलों में तय हो चुके हैं आरोप, सुप्रीम कोर्ट में याचिका

नई दिल्ली, पीटीआइ। सुप्रीम कोर्ट से एक जनहित याचिका के जरिए गुजारिश की गई है कि ऐसे लोगों के चुनाव लड़ने पर रोक लगा दिया जाए जिनके खिलाफ गंभीर अपराध के मामलों में आरोप तय किए जा चुके हैं। इस जनहित याचिका पर आने वाले दिनों में सुनवाई संभव है। याचिका में सुप्रीम कोर्ट से मांग की गई है कि वह केंद्र और चुनाव आयोग को ऐसे लोगों के चुनाव लड़ने पर रोक लगाने को लेकर कदम उठाने का निर्देश जारी करे जिनके खिलाफ गंभीर अपराध के मामलों में सुनवाई चल रही है। याचिकाकर्ता वकील अश्विनी कुमार उपाध्याय ने इस जनहित याचिका में यह भी दावा किया गया है कि विधि आयोग की सिफारिशों और न्यायालय के पूर्व में जारी निदेर्शों के बावजूद केंद्र और निर्वाचन अयोग ने इस दिशा में कदम नहीं उठाए हैं। याचिका में कहा

गया है कि साल 2019 के लोकसभा चुनाव में जीत दर्ज करने वाले 539 उम्मीदवारों में से 233 यानी 43 फीसद प्रत्याशियों ने अपने खिलाफ आपराधिक मामलों के बारे में घोषणा की थी। याचिका में कहा गया है कि साल 2009 से ऐसे सांसदों की संख्या में 109 फीसद बढ़ोतरी हुई है जिन्होंने अपने खिलाफ गंभीर आपराधिक मामलों को बताया था। याचिका के मुताबिक, एक सांसद ने अपने खिलाफ दर्ज 204 आपराधिक मुकदमों की घोषणा की थी। चौंकाने वाली बात यह है कि इन मुकदमों में गैर इरादतन हत्या, घर में जबरन घुसने, लूट और आपराधिक धमकी आदि से संबंधित मामले तक शामिल हैं।

याचिका में आपराधिक छवि वाले उम्मीदवारों और उनके जीतने की संभावना में बीते कुछ वर्षों में हुई बढ़ोतरी को लेकर चिंता जताई गई है। बीते दिनों सुप्रीम कोर्ट ने सभी उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों को कहा था कि वे उनके यहां लंबित ऐसे आपराधिक मामलों को तत्काल सुनवाई के लिए उचित पीठ के सामने लगाएं। खासकर उन मामलों में जिनमें कोर्ट ने स्टे आदेश जारी कर रखा है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि गंभीर मामलों में पहले यह देखा जाना चाहिए कि रोक जारी रहना जरूरी है या नहीं। अगर रोक जारी रहना जरूरी है, तो उस मामले को रोजाना सुनवाई करके दो महीने में निपटाया जाए। इसमें किसी तरह की कोताही नहीं होनी चाहिए...

देश में संक्रमितों का आंकड़ा 60 लाख के पार

नई दिल्ली, जेएनएन। देश में पिछले 24 घंटों के दौरान 90 हजार से अधिक नए मामले मिले हैं और संक्रमितों का आंकड़ा 60 लाख को पार कर गया है। इस दौरान 80 हजार से अधिक मरीज ठीक भी हुए हैं और कोरोना को मात देने वाले मरीजों की संख्या भी 50 लाख से अधिक हो गई है। इस महामारी ने 95 हजार से अधिक लोगों की जान भी ले ली है। समाचार एजेंसियों की तरफ से रात 11.30 बजे मिले आंकड़ों के मुताबिक शनिवार देर रात से अब तक देशभर में 90,553 नए मामले सामने आए हैं और संक्रमितों की कुल संख्या 60 लाख 66 हजार से अधिक हो गई है।

एक दिन में 83,963 मरीज ठीक भी हुए हैं। इनको मिलाकर अब तक स्वस्थ हो चुके कोरोना के मरीजों का आंकड़ा 50 लाख तीन हजार को पार कर गया है। कोरोना संक्रमण के चलते जान गंवाने वालों की संख्या भी 95,466 हो गई है। रविवार को 1,090 लोगों की जान गई, जिसमें सबसे अधिक महाराष्ट्र में 380 (कुल 35,571), कर्नाटक में 79 (8,582), उत्तर प्रदेश में 77 (5,594), बंगाल में 60 (4,781), आंध्र प्रदेश में 45 (5,708), दिल्ली में 42 (5,235) केरल में 21 (677) और ओडिशा में 14 (797) मौतें शामिल हैं।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की तरफ से सुबह आठ बजे जारी आंकड़ों के मुताबिक बीते 24 घंटों में 88,600 नए मामले मिले हैं और कुल संक्रमित 59.92 लाख हो गए हैं। इस दौरान 1,124 लोगों की मौत हुई है और मरने वालों की संख्या 94,503 हो गई है। 93 हजार से अधिक मरीज ठीक हुए हैं और

अब तक स्वस्थ हुए लोगों की संख्या 49.41 लाख से अधिक हो गई है। इसके साथ ही मरीजों के स्वस्थ होने की दर 82.46 फीसद हो गई है।

उत्तर प्रदेश में 4,403 नए मामलों के साथ संक्रमितों की संख्या 3.87 लाख को पार कर गई है। जबकि, बंगाल में 3,185 नए केस के साथ अब तक 2.47 लाख, ओडिशा में 3,922 नए मामलों के साथ 2.09 लाख और त्रिपुरा में 302 नए मरीजों के साथ अब तक 24,728 संक्रमित सामने आ चुके हैं।

महाराष्ट्र में एक दिन पहले के मुकाबले कुछ कम 18,056 नए मामले सामने आए हैं और कुल संक्रमितों की संख्या 13.39 लाख हो गई है। गुजरात में 1,411 नए मामलों के साथ अब तक 1.33 लाख संक्रमित मिल चुके हैं। देश की राजधानी दिल्ली में लगातार तीन हजार से अधिक नए मामले मिलने का सिलसिला जारी है। केंद्र शासित प्रदेश में 3,292 नए मामले सामने आए हैं और संक्रमितों का आंकड़ा 2.71 लाख को पार कर गया है।

कुछ दिनों के बाद कर्नाटक में फिर नए मामले बढ़े हैं। राज्य में 9,543 नए मामले मिले हैं और कुल संक्रमित 5.75 लाख हो गए हैं। इसी तरह केरल में रिकॉर्ड 7,445 नए केस के साथ कुल 1.74 लाख, आंध्र प्रदेश में 6,923 नए रोगी के साथ 6.75 लाख और तेलंगाना में 1,967 नए मरीज के साथ 1.85 लाख संक्रमित मिल चुके हैं।

सक्रिय मामलों से स्वस्थ हो चुके मरीजों की बढ़ती संख्या के बीच केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा है कि 21 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में प्रतिदिन सामने आ रहे नए मामलों से ज्यादा मरीज ठीक हो रहे हैं। इन राज्यों में महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर और मेघालय शामिल हैं। सक्रिय मरीजों और स्वस्थ हो चुके मरीजों के बीच का दायरा भी बढ़ता जा रहा है।

नहीं चेते हो जाएंगे बधिर, सात शहरों के 70 स्टेशनों की रिपोर्ट से हुआ खुलासा

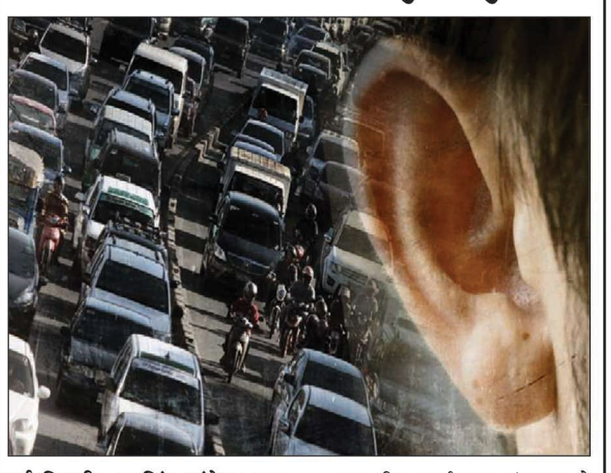

नई दिल्ली, अरविंद पांडेय। वायु प्रदूषण एक तरफ जहां जहर बनकर जिंदगी छोटी कर रहा है, वहीं जिस ध्वनि प्रदूषण को हम सामान्यतया नजरअंदाज कर रहे हैं वह हमें बधिर बना सकता है। ध्वनि प्रदूषण पर रोकथाम को लेकर निष्क्रियता का अंदाजा देश के सात शहरों में ध्वनि प्रदूषण के स्तर का मापने के लिए लगाए गए 70 स्टेशनों की रिपोर्ट से लगाया जा सकता है। हर क्षेत्र अपने तय मानक से लगातारा 15-20 डेसीबल ज्यादा ध्वनि प्रदूषण से ग्रसित है। चिंता की बात तो यह है कि सामान्यतया हर व्यक्ति चौबीसो घंटे आम बातचीत वाले शोर को ही शांति माने बैठा है। केंद्र की ओर से 16 आवासीय क्षेत्रों में, वाणिज्यिक क्षेत्र में 25, औद्योगिक क्षेत्र में 12 और शांत क्षेत्र यानी अस्पताल आदि के आसपास 17 स्टेशन स्थापित किए गए थे। इनमें से कुछ चुनिंदा स्टेशनों को छोड़ दें, तो ज्यादातर स्टेशनों पर ध्वनि प्रदूषण के तय मानकों का कोई पालन नहीं किया जा रहा है। हर जगह ध्वनि प्रदूषण का स्तर करीब 15 से 20 डेलीबल तक बढ़ा हुआ है। चौंकाने वाली बात यह है कि रात में यह स्थिति और भी ज्यादा भयावह होती है। यह स्थिति पिछले तीन सालों से लगातार बनी हुई है।

इस बीच पर्यावरण मंत्रालय ने राज्यों से ध्वनि प्रदूषण पर रोकथाम के लिए राज्यों से कार्य योजना भी मांगी है। जिसे दर्जन भर से ज्यादा राज्यों ने तैयार भी कर ली है, लेकिन जमीन पर कहीं भी काम होते नहीं दिख रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, जिस तरह से ध्वनि प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है, वह खतरनाक है, क्योंकि सौ डेसीबल में एक घंटा तक रहने पर ही कोई भी व्यक्ति बधिर हो सकता है। वैसे भी ज्यादातर बड़े शहरों में ध्वनि प्रदूषण का स्तर पर 75 से 80 तक पहुंचने लगा है। ध्यान रहे कि 80 डेसीबल पर अलार्म क्लाक आवाज करता है। जबकि ब्लेंडर, हेयर ड्रायर आदि की आवाज 90 डेसीबल तक होती है। सामान्य बातचीत या डिशवाशर की आवाज 60 डेसीबल होती है जो सामान्यतया हर शहर में हर जगह मौजूद होता है।

दिल्ली, मुंबई, लखनऊ, बैंगलुरू, चेन्नई, कोलकाता, हैदराबाद। इनमें से सभी शहरों में दस स्टेशन लगाए गए है। जिनका हर दिन का डाटा जुटाया जाता है। साथ ही उन पर नजर रखी जाती है। इसी तर्ज पर दूसरे महानगरों में भी ध्वनि प्रदूषण के स्तर को जांचने के लिए स्टेशन खोलने का प्रस्ताव है।

बॉलीवुड ड्रग मामले में 18 से ज्यादा गिरफ्तार

मुंबई, एजेंसियां। नार्कोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र के उप महानिदेशक अशोक जैन ने बताया कि बॉलीवुड ड्रग मामले में अब तक 18 से ज्यादा लोगों को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने कहा कि दीपिका पादुकोण, सारा अली खान, श्रद्धा कपूर और करिश्मा प्रकाश का बयान दर्ज कर लिया गया है। रविवार को कोई नया समन जारी नहीं किया गया। इस बीच, मुंबई की एक अदालत ने करण जौहर की फर्म से जुड़े कार्यकारी निमार्ता क्षितिज रवि प्रसाद को तीन अक्टूबर तक के लिए एनसीबी की हिरासत में भेज दिया है।

प्रसाद को शनिवार को एनसीबी ने गिरफ्तार किया था। उन्हें रविवार को वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये मजिस्ट्रेट की अदालत में पेश किया गया। अदालत ने उन्हें आगे की पूछताछ के लिए एनसीबी की हिरासत में भेज दिया। दूसरी तरफ

एनसीबी के प्रमुख राकेश अस्थाना ड्रग मामले की जांच का जायजा लेने के लिए रविवार शाम मुंबई पहुंचे। सूत्रों ने बताया कि उन्होंने कई अधिकारियों से मुलाकात की, जिन्होंने उन्हें जांच की प्रगति से अवगत कराया। प्रवर्तन निदेशालय द्वारा लिखे जाने के बाद एनसीबी ने ड्रग मामले की जांच अपने हाथ में ली थी। कई बॉलीवुड हस्तियों द्वारा चैटिंग के दौरान ड्रग के बारे में बात करने के सुबूत मिले हैं। बता दें कि एनसीबी ने शुक्रवार को अभिनेत्री रकुलप्रीत सिंह, दीपिका पादुकोण की मैनेजर करिश्मा प्रकाश एवं धर्मा प्रोडक्शन के कार्यकारी निमार्ता क्षितिज रवि प्रसाद से पूछताछ की थी। एनसीबी ने ड्रग से जुड़े दो मामलों की एफआइआर दर्ज की है। दोनों की समानांतर जांच चल रही है। एक एफआइआर का नंबर 15/20, तो दूसरी का 16/20 है। 15/20 में सुशांत सिंह राजपूत से जुड़ी रिया चक्रवर्ती, शौविक चक्रवर्ती, दीपेश सावंत एवं सैमुअल मिरांडा की जांच की जा रही है। 16/20 में बॉलीवुड से जुड़े अन्य लोगों की। एनसीबी के एक अधिकारी ने बीते शुक्रवार को बताया था कि रिया चक्रवर्ती अपने भाई शौविक के जरिए सुशांत सिंह राजपूत के लिए ड्रग खरीदा करती थी। अधिकारी ने बताया कि ड्रग की खरीद-बिक्री में शामिल बासित परिहार से पूछताछ के दौरान शौविक का नाम आया था। परिहार ने कथित तौर पर माना कि वह अपने दोस्त शौविक के लिए ड्रग खरीदता था। इसके बाद शौविक ने भी इस बात को स्वीकार किया कि वह परिहार और कैजान इब्राहिम से ड्रग खरीदकर अपनी बहन रिया को दे देता था। फिर रिया इसे सुशांत को दे देती थी।

नहीं रहे पूर्व केंद्रीय मंत्री जसवंत सिंह, प्रधानमंत्री-रक्षा मंत्री राजनाथ समेत कई नेताओं ने जताया शोक

नई दिल्ली, एजेंसियां। देश के पूर्व रक्षा मंत्री जसवंत सिंह(खं२६ंल्ल३ ्रल्लँ) का आज निधन हो गया। वह 82 साल के थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट कर इसकी जानकारी दी। पीएम मोदी ने ट्वीट में लिखा- 'जसवंत सिंह जी ने पहले एक सैनिक, फिर राजनीति में सक्रियता के जरिए हमारे देश की लगन से सेवा की। अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार में उन्होंने कई अहम मंत्रालय संभाले और वित्त, रक्षा व विदेश क्षेत्र में अपनी गहरी छाप छोड़ी। पीएम मोदी ने कहा कि उनके निधन से दुखी हूं।जसवंत सिंह लंबे समय से बीमार चल रहे थे। साल 2014 में घर में बाथरूम में गिरने के कारण जसवंत सिंह के सिर में गंभीर चोट आई थी जिसके बाद से वो कोमा में थे। जसवंत सिंह एनडीए की अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में केंद्रीय मंत्री रहे थे। वाजपेयी जी की सरकार में जसवंत सिंह ने विदेश, रक्षा और वित्त जैसे बड़े मंत्रालय का काम संभाला। पूर्व रक्षा मंत्री जसवंत सिंह का जन्म 3 जनवरी सन 1938 को राजस्थान के बाड़मेर जिले के एक गांव में हुआ था। शुरूआती जीवन में वह सेना में भी रहे। साल 1957 से लेकर 1966 तक जसवंत भारतीय सेना में रहे। इसके बाद वे राजनीति में आ गए। हालांकि यहां उन्हें शुरूआत में ज्यादा सफलता नहीं मिली। 80 के दशक में उन्हें राज्यसभा के लिए चुना गया। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने भी जसवंत सिंह के निधन पर दुख जताते हुए ट्वीट किया- वयोवृद्ध सैनिक, उत्कृष्ट सांसद, असाधारण नेता और बौद्धिक श्री जसवंत सिंह का निधन चिंताजनक है। उन्होंने कई कठिन भूमिकाओं को सहजता और समानता के साथ जोड़ा। उनके परिवार और दोस्तों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदना। जसवंत सिंह के निधन पर गृह मंत्री अमित शाह ने भी शोक जताया है। उन्होंने ट्वीट कर कहा- देश के वरिष्ठ राजनेता एवं अटल जी की कैबिनेट में मंत्री रहे जसवंत सिंह जी का निधन दुःखद है और देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है। सरकार व संगठन में विभिन्न पदों पर रहते हुए उन्होंने अपनी कर्तव्यनिष्ठा से एक गहरी छाप छोड़ी है। मैं उनके परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं। ॐ शांति।

ग्रामीण अंचल

प्रयागराज सोमवार, 28 सितम्बर, 2020

राष्ट्रीय महासचिव समाजवादी पार्टी अखिलेश कटियार का हुआ जोरदार स्वागत

सिरसा। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के निर्देश पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव अखिलेश कटियार का मेजा विधानसभा में भव्य स्वागत पूर्व विधायक रामसेवक सिंह पटेल ने और विधानसभा अध्यक्ष मेजा श्यामकृष्ण यादव उर्फ पप्पू यादव चेयरमैन सिरसा व समाजवादी नेता डा.देवी सिंह पटेल, विधानसभा उपाध्यक्ष जयशंकर भारती एवं युवा नेता रचित कुमार विश्वकर्मा द्वारा भव्य स्वागत किया गया। मेजा विधानसभा के ग्राम सभा टिकुरी समहन मे श्यामकृष्ण पटेल जी के आवास पर जन चौपाल में किसानों के लिए पास हुए किसान विरोधी विधेयक पर हमला बोलते हुए कहा कि यह सरकार किसान विरोधी, रोजगार विरोधी सरकार है यह सरकार किसानों को आत्महत्या करने पर मजबूर कर रही है इसी कारण किसान आत्महत्या करने पर मजबूर रहता है । डेलौहा में कमला पटेल के आवास पर युवाओं को प्रोत्साहन दिया कहा कि राष्ट्रीय सचिव अखिलेश कटियार ने कहा अगर हमारी 2022 में सरकार बनती है तो हम शिक्षित युवाओं को रोजगार देने का काम करेंगे और हाई स्कूल व इंटरमीडिएड बच्चो को पढने के लिए लैपटॉप देने का काम करेंगें और अखिलेश यादव के द्वारा लागू बेरोजगारों के लिए बेरोजगारी भत्ता लागू करेंगे और आगे उचंडीह सोनाई में

राष्ट्रीय महासचिव समाजवादी पार्टी अखिलेश कटियार का स्वागत करते सपा कार्यकर्ता

लौहपुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल की मूर्ति पर माल्यार्पण कर जनसभा को संबोधित किया और कहा कि सरदार पटेल जी जो एकता की लड़ाई लड़ रहे थे वह लड़ाई हम विरोधियों को 2022 में एकता का परिचय देते हुए दिखा कर रहेंगे और हम 2022 मे सरकार बना के रहेगें और भाजपा जैसी निकम्मी सरकार को जड से उखाड़ फेकेंगे। और आगे राष्ट्रीय सचिव अखिलेश कटियार पयागपुर सोबरी में राजमणि पटेल के द्वारा आयोजित जनसभा में इलाहाबाद झांसी खंड स्नातक एमएलसी प्रत्याशी डॉक्टर मान सिंह यादव को इलाहाबाद झांसी खंड का एम एल सी चुनने के लिए शिक्षकों को प्रोत्साहित किया कि मान सिंह यादव शिक्षकों की आवाज हैं डा. मानसिंह को भारी से भारी मतो से विजयी बना कर शिक्षक सभा को मजबूत करे व राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव जी के हाथों को मजबूत बनाने की अपील की इस कार्यक्रम में समाजवादी पार्टी के नेता नीरज सिंह यादव, प्रदीप यादव, राजेश यादव, दूधनाथ पटेल, महेश राज यादव ब्लाक प्रमुख उरूवा, विश्वनाथ यादव, अवनीश यादव, पवन सिंह पटेल, रवि प्रकाश भारती, राहुल यादव, राकेश यादव, अखिलेश यादव, अंकित प्रधान, धर्मेंद्र यादव सांसद, रवि यादव, लक्ष्मी पाल, राकेश पटेल, सुरेश पटेल, सिपाही लाल पटेल, संगमलाल भारती, लवकुश विश्वकर्मा, रामनिरंजन विश्वकर्मा, प्रदीप पटेल, कमल बाबू पटेल, रामराज पटेल, राजू मोर्या, यशवंत यादव, बैजनाथ पटेल बालगोबिंद कोरी, रमेश पटेल, बसंत लाल विश्वकर्मा, रमेश विश्वकर्मा, रमेश पटेल, दिलीप विश्वकर्मा, रवि, शुशील, नीरज विश्वकर्मा, लवकुश यादव दीवाकर यादव अधिवक्ता, विजय राज यादव,आकाश यादव, शनि यादव आदि प्रमुख लोग उपस्थित थे।

तमंचे की नोक पर मोबाइल व नकदी लूटे

नैनी। औद्योगिक क्षेत्र के रामपुर पुलिस चौकी के समीप पावर हाउस के निकट बदमाशों ने एक युवक से तमंचे की नोक पर मोबाइल व नकदी लूटकर फरार हो गए भुक्तभोगी की तहरीर मिलने पर पुलिस ने औद्योगिक क्षेत्र थाने में रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जांच पड़ताल करने में जुटी हुई है। जानकारी के मुताबिक करछना इलाके के रहने वाले नितेश तिवारी शुक्रवार देर रात लगभग 11:00 बजे बाइक द्वारा अपने मित्र के साथ शहर से घर वापस लौट रहे थे। जैसे ही औद्योगिक क्षेत्र के रामपुर पुलिस चौकी के समीप पावर हाउस के निकट पहुंचे, पहले से मौजूद बदमाशों ने उन्हें घेराबंदी कर रोक लिए और लूटपाट करने लगे। विरोध करने पर तमंचा सटा दिए और मोबाइल व लगभग दो हजार रुपए नकदी लूटकर फरार हो गए।

जन विरोधी नीतियों का हर कदम पर किया जाएगा विरोध : कटियार

शंकरगढ़। उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था पटरी से उतर चुकी है। बेरोजगारी बढ़ रही है। महिलाओं पर अत्याचार बढ़ा है। किसान भी खून के आंसू रो रहा है। यह बातें समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव अखिलेश कटियार ने कही।

यमुनापार के नारीबारी चौराहे पर स्थित पार्टी कार्यालय में पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ हुई बैठक में श्री कटियार ने केंद्र और प्रदेश सरकार पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि बेरोजगारी बढ़ती जा रही है और सरकार कृषि व श्रम विधेयक लाकर मुश्किल और बढ़ा रही है। उन्होंने कहा कि केंद्र और प्रदेश सरकार की गलत नीतियों का समाजवादी पार्टी हर कदम पर विरोध करेगी। इस अवसर पर सपा जिलाध्यक्ष योगेश चंद्र यादव, बारा विधानसभा अध्यक्ष द्वारिका प्रसाद पटेल, निवर्तमान महासचिव सपा बारा कामद प्रताप सिंह, सचिन वैश्य,

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव का स्वागत करते हुए

सपा नेत्री गुलाब कली, अतुल कुमार यादव, मुलायम यादव, शैलेंद्र सिंह, विजय बागी, घनश्याम कोटार्य पूर्व ब्लाक अध्यक्ष जसरा, बृजेश यादव,अनीश सिंह पटेल, दिवाकर सिंह, गुड्डा मिश्रा और शैलेन्द्र सिंह मीडिया प्रभारी आदि मौजूद रहे।

इसी तरह बारा विधानसभा क्षेत्र के बसहरा उपरहार में भी सपा के राष्ट्रीय सचिव अखिलेश कटियार ने किसान, मजदूर, नौजवानों से तमाम समस्याओं पर चर्चा की। इस अवसर पर पूर्व ब्लाक प्रमुख गुलाब कली, देवी सिंह पटेल, अर्जुन सिंह पटेल, अनीश सिंह पटेल, मुलायम यादव, दिवाकर सिंह, बृजेश कुमार यादव, विजय बागी,आर एस यादव, गुड्डा मिश्र, जीतू सिंह पटेल आदि लोग उपस्थित रहे।

संदिग्ध दशा में युवक की मौत गैर इरादतन हत्या का केस दर्ज

शंकरगढ़। शनिवार की शाम हुई हाथापाई में जख्मी हुए युवक की रविवार की सुबह मौत हो गई। पुलिस को दी गई तहरीर के मुताबिक युवक के साथ हाथापाई की गई थी।इस दौरान वह गिरकर गंभीर रूप से चोटिल हो गया। सुबह इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ गैर इरादतन हत्या का केस दर्ज कर लिया है। यह मामला बारा थाना क्षेत्र के गन्ने ग्राम सभा का है।

नारीबारी के सुरवल साहनी निवासी अशोक कुमार (42) पुत्र स्वर्गीय शिवधारी अपने परिवार के साथ गन्ने पहाड़ पर रहता था। अशोक पिछले एक पखवारे से बीमार चल रहा था। शनिवार को वह अपना इलाज करवाने जा रहा था। इसी दौरान गन्ने पहाड़ के ही बड़ेलाल उर्फ बड़का आदिवासी उससे झगड़ा करने लगा। उसने पहले से बीमार अशोक कुमार के साथ हाथापाई की और धक्का देकर गिरा दिया। अशोक कुमार गिरकर गंभीर रूप से चोटिल हो गया। उसे आनन-फानन में नजदीक के अस्पताल ले जाया गया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद उसे जिला अस्पताल भेज दिया गया। रविवार की सुबह इलाज के दौरान अशोक की मौत हो गई। बारा थाने के इंस्पेक्टर सुनील कुमार सिंह और उपनिरीक्षक अर्जुनलाल ने बताया कि मृतक के भाई कुंजलाल की तहरीर पर बड़ेलाल के खिलाफ गैर इरादतन हत्या का मामला दर्ज कर लिया गया है।आरोपी की तलाश की जा रही है। शव को चीर घर भेज दिया गया है। अशोक की मौत से उसकी बेटी संगीता (12) और अशोक की बूढ़ी मां का रो-रोकर बुरा हाल है। वहीं पुलिस के अनुसार देर शाम आई पीएम रिपोर्ट में युवक के मौत की पुष्टि बीमारी से हुई है।

तमंचे की नोक पर दंपत्ति को पीटा, जख्मी

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के कांशीराम योजना कॉलोनी में बीती रात कुछ लोगों ने एक दंपति को तमंचे की नोक पर जमकर पिटाई कर दिए। जिससे से जख्मी हो गए। तहरीर मिलने पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जांच पड़ताल करने में जुटे हुए हैं। जानकारी के मुताबिक नैनी कोतवाली क्षेत्र के कांशीराम योजना कॉलोनी के रहने वाले एक दंपत्ति को वहीं के रहने वाले कुछ लोगों ने पुरानी रंजिश को लेकर शनिवार रात विवाद कर लिए और आगे बढ़ी तो सभी ने दंपति को तमंचे की नोक पर लाठी-डंडों से जमकर मारपीट कर घायल कर दिए। आरोप है कि आरोपियों ने महिला के साथ अभद्रता व छेड़खानी कर दिए। तहरीर मिलने पर पुलिस ने पिन्टू भारतीया, चुन्ना भारतीया, सूरज भारतीया, रतन भारतीया, दिनेश कनौजिया व संजय चौरसिया के खिलाफ धारा 147, 148, 149, 323, 504, 506 व 354 आईपीसी एक्ट के तहत नैनी कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज की गई है।

चार कुंतल गांजा में वांछित चल रहे दो अभियुक्त गिरफ्तार

गांजे के साथ पुलिस की गिरफ्त में वांछित अभियुक्त

कोरांव। चार कुंतल गांजा में वांछित चल रहे दो अभियुक्तों को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। उक्त दोनों अभियुक्तों के पास से साढ़े चार किलो गांजा भी बरामद हुआ है। पुलिस की इस कार्यवाही से हड़कंप मचा है।

वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर अवैध मादक पदार्थों की बिक्री रोकथाम के लिए इलाकाई पुलिस लगातार कार्यवाही कर रही है। इसी क्रम में उपनिरीक्षक बृजेश यादव, उपनिरीक्षक संजय सोनकर अपनी टीम के साथ क्षेत्र में भ्रमण कर रहे थे कि मुखबीर द्वारा सूचना मिली है कि कोसफरा नहर के पास दो गांजा तस्कर गांजा को बेचने के फिराक से खड़े है। इस दौरान पुलिस ने सूचना के आधार पर सटीक स्थान पर पहुँचकर घेराबंदी करते हुए हरिओम पटेल पुत्र स्व0 बृजलाल पटेल निवासी कोरांव व शशी पटेल पुत्र स्व0 बृजलाल पटेल को गिरफ्तार कर लिया गया है जिनके पास से साढ़े चार किलो गांजा भी बरामद की है। पुलिस ने दोनों तस्करों पर कार्यवाही करते हुए जेल भेज दी है। हरिओम पटेल व शशी पटेल के खिलाफ कोरांव थाने में कई मुकदमा दर्ज है। कोरांव थाना प्रभारी चंद्रभान सिंह ने बताया कि अवैध मादक पदार्थों बिक्री के खिलाफ अभियान चलाकर कार्यवाही की जा रही है जो आगे भी जारी रहेगा।

अजगर ने नील गाय के बच्चे को जकड़ा

करछना। क्षेत्र के बस्तर गांव में लोहिया पटेल के घर के समीप धान के खेत के समीप रविवार सुबह एक अजगर ने नीलगाय के बच्चे को धर दबोचा और अपनी जकड लिया लिया। देखते ही देखते गाव के लोगो की भीड जमा हो सूचना मिलने पर पुलिस के साथ ही वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और अजगर की चंगुल से नील गाय के बच्चे को बचाने की प्रयास किया जाने लगा इसी बीच अजग कही भाग गया।जिससे गाव के लोगों मे दहशत व्याप्त रही।

पुलिस से कहीं आगे निकल गयी खनन माफियाओं की सक्रियता

हनुमानगंज। माननीय उच्च न्यायालय भले ही बालू और मिट्टी के अवैध कारोबार पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाई हो किन्तु माननीय न्यायालय के आदेशों को ताक पर रख कर खनन माफियाओं का व्यवसाय पुलिस की सह पर तीव्र गति से चल रहा है। सरायइनायत थाना क्षेत्र के कई गांवों में रात 10 बजे से जेसीबी, ट्रैक्टर, डम्फर, रोडों पर गरजने लगते हैं। शनिवार कि सुदनीपुर कला गांव में जेसीबी लगाकर मिट्टी की खुदाई का कार्य रातभर चला। जिसकी सूचना ग्रामीणों ने सरायइनायत पुलिस को दी थाने की पुलिस मौके पर पहुँच कर खनन माफियाओं के खिलाफ कार्यवाही करने के बजाय यह कहते हुए पलड़ा झाड़ लिया कि जब तक खनन विभाग के लोग मौके पर नहीं आयेगें तब तक हम खनन कार्य कैसे बंद कराऐं।

हाईकोर्ट समाचार

आरक्षियों को नियुक्ति तिथि से 2800 ग्रेड पे व अन्य लाभ देने को लेकर डीजीपी मुख्यालय को निर्देश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सपा शासनकाल में नियुक्त वर्ष 2005-2006 बैच के आरक्षियों की संयुक्त रूप से दायर याचिका पर उनकी 10 वर्ष की सेवा पूरा हो जाने के बाद 2800 ग्रेड पे प्रदान करने व सातवें वेतन आयोग का लाभ देने को लेकर विभागीय उच्चाधिकारियों डीजीपी मुख्यालय लखनऊ को निर्देश दिया है। हाईकोर्ट ने याचिका को निस्तारित करते हुए इन आरक्षियों की मांग पर विभाग को निर्णय लेने का निर्देश दिया है। प्रदेश के लगभग एक दर्जन जिलों में तैनात इन आरक्षियों ने याचिका दायर की थी। यह आदेश जस्टिस एम.के गुप्ता ने यूपी सिविल पुलिस-पीएसी में 2005-06 में नियुक्त आरक्षियों संजीव कुमार, शिवशंकर व कई अन्य आरक्षियों की याचिका को निस्तारित करते हुए दिया है। इन सिपाहियों को प्रोन्नत वेतनमान, वरिष्ठता, वेतन वृद्धि आदि पर फैसला लेने का डीजीपी पुलिस मुख्यालय को निर्देश दिया है। कोर्ट ने मायावती राज में बर्खास्त, बाद में कोर्ट आदेश से नियुक्ति तिथि से बहाल 22 हजार सिपाहियों को वेतन वृद्धि, प्रोन्नत वेतनमान, प्रशिक्षण अवधि सहित सेवा निरंतरता के साथ वरिष्ठता निर्धारण पर निर्णय लेने का निर्देश दिया है। याचिका पर वरिष्ठ अधिवक्ता विजय गौतम ने बहस की। इनका कहना है कि हापुड, कानपुर नगर, मेरठ, गौतमबुद्धनगर, इलाहाबाद, वाराणसी, मथुरा, गोरखपुर, गाजियाबाद में तैनात आरक्षियों ने हाईकोर्ट की शरण ली है। आरोप है कि 2007 में बर्खास्त सिपाहियों को सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर 26 मई 2009 को नियुक्ति तिथि से बहाल किया गया। बर्खास्तगी अवधि को काम नही तो वेतन नही के सिद्धांत पर अवकाश माना गया। सेवा निरंतरता दी गयी है किन्तु वरिष्ठता, वेतन वृद्धि, प्रोन्नत वेतनमान, सातवें आयोग की सिफारिशों का लाभ नही दिया जा रहा है। जो सुप्रीम कोर्ट के दीपक कुमार केस में दिए निदेशों की अवहेलना है। याचियों के प्रशिक्षण अवधि को सेवा निरंतरता में शामिल कर वेतनमान पाने का अधिकार है। अधिवक्ता विजय गौतम का कहना है कि सरकार स्वयं अपने शासनादेश का पालन नही कर रही है।

मालूम हो कि 2005-06 में सपा सरकार में पुलिस-पीएसी भर्ती में चयनित 22 हजार सिपाहियों को भर्ती में धांधली के आधार पर 2007 में बर्खास्त कर दिया गया था। इसे हाईकोर्ट में चुनौती दी गयी। एकलपीठ ने याचिकाएं मंजूर कर ली और सेवा निरंतरता के साथ नियुक्ति तिथि से बहाल करने का निर्देश दिया। जिसके खिलाफ विशेष अपील खारिज हो गयी।तो सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में एस एल पी दाखिल की।कोर्ट के अंतरिम आदेश पर डी जी पी ने सभी सिपाहियों को बहाल कर लिया। बर्खास्त अवधि का वेतन नही दिया गया। बाद में सरकार बदलने पर एसएलपी वापस ले ली गयी। कोर्ट के स्पष्ट निर्देश के बावजूद सरकार सिपाहियों को उन्हे मिलने वाले सेवा जनित लाभों से वंचित कर रही है। जिस पर यह याचिका दाखिल की गयी थी।

पति को भतीजे की कैद से छुड़ाने को पत्नी पहुंची हाईकोर्ट

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने एसएसपी कानपुर नगर को निर्देश दिया है कि भतीजे व उसकी बहू द्वारा घर में निरूद्ध सीनियर सिटीजन राम चन्द्र को पुलिस सुरक्षा और कोविड 19 के नियमों का पालन करते हुए एक अक्तूबर को दो बजे कोर्ट में पेश करे। यह आदेश न्यायमूर्ति जे जे मुनीर ने श्रीमती किरण व अन्य की बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका पर दिया है। 30 नवंबर 19 को शादी करने वाली सीनियर सिटीजन पत्नी श्रीमती किरण ने अपने पति राम चन्द्र को स्वतंत्र कराने के लिए हाईकोर्ट की शरण ली है। आरोप लगाया है कि राम चन्द्र के भतीजे मनोज कुमार व उसकी पत्नी श्रीमती रानी देवी ने मकान नं 2/91 शिव कटरा, लाल बंगला, चकेरी कानपुर नगर मे अवैध रूप से निरूद्ध कर रखा है। कोर्ट ने दोनों विपक्षियों को नोटिस जारी की है और चीफ मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट कानपुर नगर को नोटिस तामील कर रिपोर्ट भेजने का आदेश दिया है। कोर्ट ने एसएसपी कानपुर नगर को निर्देश दिया है कि हर हाल में अवैध रूप से निरूद्ध रामचन्द्र को 1 अक्तूबर को दो बजे कोर्ट में पेश करे और राम चंद्र की सुरक्षा के लिए वह जहा भी हो, तुरन्त पुलिस बल भेजे ताकि उनके जीवन को कोई हानि न पहुंचाया जा सके। कोर्ट ने कहा कि उनकी सुरक्षा केस तय होने तक जारी रखी जाय।

पराली से बनाएं खेत के लिए जैविक खाद

शंकरगढ़। खेत में पराली जलाना न सिर्फ पर्यावरण के लिए नुकसानदायक है बल्कि खेत के लिए भी हानिकारक है। पराली जलाने के स्थान पर किसान भाई कृषि विभाग की मदद से उसे उर्वरक में बदल सकते हैं। कृषि विभाग की तरफ से किसानों को कई प्रकार के उपकरणों पर विशेष छूट दी जा रही है। किसानों को यह जानकारी बारा थाना परिसर में आयोजित बैठक में कृषि विभाग के अधिकारियों ने दी।

इस बैठक में कृषि विभाग से आए जयवीर सिंह ने बताया कि यदि कोई किसान पराली जलाते हुए पकड़ा जाता है तो उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्यवाही की जाएगी। पराली किसानों को न जलानी पड़े, इसके लिए विभाग द्वारा हार्वेस्टर, ट्रैक्टर

जैविक खाद के बारे में जानकारी देते कृषि विभाग के अधिकारी

रोटावेटर सहित कई अन्य उपकरणों पर सरकार अनुदान दे रही है। पराली जलाने के स्थान पर किसान भाई बेस्ट ट्रिक कंपोजर की दवा सिर्फ 25 रुपये में प्राप्त कर सकते हैं। श्री सिंह ने बताया कि सरकार द्वारा सुपर इंस्ट्रा मैनेजमेंट सिस्टम, पैडी स्ट्रा चौपट, हैली सीडर, सुपर सीडर, मल्चर सहित कई उपकरणों पर 50 से 80 फीसद अनुदान दिया जा रहा है।

वहीं तहसीलदार बारा डॉक्टर विशाल शर्मा ने ग्राम प्रधानों को इस ओर विशेष ध्यान देने के लिए निर्देशित किया। अंत में थानाध्यक्ष बारा सुनील कुमार सिंह ने सभी किसानों और प्रधानों का आभार जताते हुए सहयोग की अपील की। कार्यक्रम में मुख्य रूप से ग्राम प्रधान मोहम्मद अली, सुमंत भार्गव, राजेश पांडे, अजय साहू, महेंद्र, धनराज यादव, बहुगुणा बिंद, गंगाधाम संचालक अंबुज त्रिपाठी, अजय पांडे, अखिलेश त्रिपाठी, मनोज बिंद, पप्पू सिंह, उप निरीक्षक अर्जुन लाल, समीर सचान, अजीत सिंह, जीतेंद्र यादव आदि मौजूद रहे।

ट्रक से कुचल कर महिला की दर्दनाक मौत

हनुमानगंज। सराय इनायत थाना क्षेत्र के हनुमानगंज स्टेट बैंक के निकट रविवार सुबह करीब 6:00 बजे ट्रक की चपेट में आने से एक महिला की दर्दनाक मौत हो गई। ट्रक चालक मौके का फायदा उठाकर भाग निकला।

मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेजा। दोपहर बाद उतराँव थाना क्षेत्र के मंडौर गांव निवासी राम अवध भारतीया ने मृत महिला को अपनी पुत्री मनोरमा उम्र लगभग 30 वर्ष के रूप में शिनाख्त किया परिजनों के मुताबिक मृत मनोरमा का पिछले कुछ सालों से मानसिक संतुलन ठीक नहीं था। रविवार कि रात भोर में घरसे निकली है। सुबह होने पर हम लोग खोजबीन करने लगे तो पता चला कि हनुमानगंज स्थित एक महिला की ट्रक की चपेट में आने से मौत हुई है जिसपर परिजन सराय इनायत थाने पहुँचे और पिता रामअवध ने उसकी तस्वीर देखकर सिनाख्त की।

मनोरमा एक बच्ची की माँ भी है उसकी मानसिक संतुलन बिगड़ने के बाद उसका पती मुन्ना निवासी हर्राई करछना पिछले कुछ सालों से उसे छोड़ दिया था तबसे अपने पिता के साथ रहती थी।

शराब के सेल्स मैन सहित दो दर्जन के खिलाफ महामारी का मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। बिना मास्क लगाने तथा भीड एकत्रित करने पर पुलिस ने दो शराब के सेल्स मैनों सहित दो दर्जन के खिलाफ महामारी मुकदमा दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा क्षेत्र में खुलेआम बिना मास्क के घूमने तथा भीड एकत्रित करने पर ग्राम बागी में स्थित देशी शराब के सेल्समैन राहुल निवासी सिंठौली टंकी उतरांव तथा फूलचंद्र ग्राम रामापुर फतनपुर के खिलाफ महामारी अधिनियम का मुकदमा दर्ज किया है। इसी प्रकार थाना पड़ाव प्रतापगढ़ प्रयागराज हाईवे पर स्थित जूता चप्पल के दुकानदार इरसाद पुत्र सलीम तथा ग्राम कटभरप्रमेजपुर निवासी आकाश यादव, धीरज यादव, ग्राम सादलपुर निवासी सुभाष, ग्राम गढचम्पा निवासी गुलाब चन्द्र, रमेशचन्द्र, मक्खन लाल, सुखराज, ग्राम दुबाही निवासी असलम, खलील, ग्राम जय सिंहपुर निवासी जगत बहादुर, धीरज कुमार ग्राम सराय ऐतराय रानीगंज राजेश शुक्ला ग्राम अतरौली फूलपुर, आशीष ग्राम अतरौरा फूलपुर तथा ग्राम मऊदोस्तपुर निवासी मोहम्मद सुफियान, नफीस, जुबैर, जीतेन्द्र एवं पूर्णमासी, अनवारुल हक आदि के खिलाफ मऊआइमा पुलिस ने धारा 188, 269 तथा 3 मास्क न पहनने और भीड एकत्रित करने एंव महामारी अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया है।

न शौचालय न आवास कैसे होगा गांव का विकास

लालापुर। जी हाँ विकासखंड शंकरगढ़ के अंतर्गत स्थित लालापुर गांव की एक पात्र गरीब असहाय दंपति प्रधानमंत्री आवास और शौचालय योजना की मांग के लिए साल भर से दर-दर भटक रहे हैं और ग्राम प्रधान और संबंधित ग्राम विकास के विभागों के अनेकों बार अर्जी दिए जाने के बाद संबंधित अधिकारियों की चक्कर लगाने के बाद भी पात्र लाभार्थी को आज तक शौचालय और आवास नहीं नसीब हो सका जिसकी दंपति लालापुर कच्चे खपरैल घर में रहने के लिए विवश है और सौच के लिए बाहर जाना पड़ता है ब्लॉक शंकरगढ़ के लालापुर

कच्चे व जर्जर मकान में गुजर बसर करता परिवार

निवासी तारा देवी पति स्वर्गी राममूरत भूमिहीन कमजोर तबके की किस्म के व्यक्ति हैं और लंबे समय से कच्चे घर पर बेटे और बहु और छोटी छोटी बच्ची के सहित गुजारा कर रही हैं वर्षों पूर्व से इनका कच्चा मकान जर्जर अवस्था में हो गया है पिछले वर्ष की बारिश में मकान का पुरा हिस्सा भी धराशाई हो गया है जिससे इन दिनों उनका घर में खंडहर में भी तब्दील हो गया है जिनकी शिकायत पात्र लाभार्थी की ओर से लेखपाल से की गई थी लेखपाल ने मौके पर जांच भी किया था और अपनी कार्रवाई भी की थी लेकिन 1 साल बीत जाने के बाद भी लाभार्थी को आवास योजना नहीं मिला खंड विकास अधिकारी अलावा शासन स्तर पर भी की गई है।

प्रयागराज हलचल

संक्षेप समाचार

रोटरी इलीट ने अरुनव रे स्मृति में भाषण प्रतियोगिता आयोजित की

प्रयागराज। रोटरी इलाहाबाद इलीट और जगत तारन गर्ल्स इंटर कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को अरुनव रे स्मृति में इंटर स्कूल हिंदी भाषण प्रतियोगिता का ऑनलाइन आयोजन किया गया। राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति में हिन्दी का महत्व विषय पर विभिन्न विद्यालयों से आये हुए छात्र-छात्राओं ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रत्येक प्रतियोगी को 5 मिनट का समय दिया गया। प्रतियोगिता में शामिल होने वाले प्रमुख विद्यालय जगत तारन गोल्डन जुबली, महर्षि पतंजलि विद्या मंदिर, विद्या वाहिनी, जगत तारन गर्ल्स इंटर कॉलेज, सन्त अन्थोनी गर्ल्स इंटर कॉलेज एवं बीबीएस इंटर कॉलेज रहे। इस मौके पर क्लब के पूर्व मंडलाध्यक्ष अमिताव रे, असिस्टेंट गवर्नर मुनिराज पटेल व अमिताभ सोनी व रोटरी क्लब के अन्य सदस्य उपस्थित रहे। निर्णायक मंडल स्वतंत्रता शर्मा और शशांक जैन के अनुसार विजेताओं के नाम घोषित किये गए। जिसमें प्रथम पुरस्कार जगत तारन गोल्डन जुबली की कृति पटेल, द्वितीय पुरस्कार वैष्णवी बाजपेई व अमनदीप मिश्रा विद्या वाहिनी एवं वंशिका पाठक सन्त अन्थोनी आदि रहे।

जिलाध्यक्ष बनाये जाने पर जताई खुशी

करछना। रविवार को स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्ताओं की एक बैठक ब्लाक अध्यक्ष डा0 दिनेश कुमार सोनी की अध्यक्षता में हुई जिसमे जमुनापार के नये जिलाध्यक्ष अरूण तिवारी को बनाये जाने पर कांग्रेसियों ने बधाई दी। कार्यकर्ताओं ने कहा कि अरूण को जिलाध्यक्ष बनाये जाने से पार्टी के लोगो को एक नई ऊर्जा के साथ काम करने मे बल मिलेगा। इस मौके पर रंगराज सिंह, शिव, विजय सिंह, विद्याधर मिश्र सुरेश पटेल, लालचन्द्र यादव, राजू शुक्ला, आशीष कुमार, कौशलेन्द्र गौड आदि रहे।

अतीक गैंग के शूटरों के घरों पर चला बुलडोजर

बेली कछार में अतीक के गुर्गों की लाज पर चला बुलडोजर

लाज ढहाता जेसीबी

प्रयागराज। अतीक अहमद गैंग के शूटरों के खिलाफ अवैध अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई करते हुए कैन्ट थाना क्षेत्र के बेली गांव के कछारी क्षेत्र में स्थित कम्बू एवं जाबिर की लाज एवं माकान रविवार को खाली कराया गया। पीडीए एवं प्रशासनिक अधिकारी ने राजकीय जमीन खली कराने के लिए बुलडोजर लगाकर गिराने की कार्रवाई की गई।

अतीक के खिलाफ पूर्व शूटरों और गुर्गो की भी मुश्किलें बढ़ गई है। कैन्ट के बेली गांव निवासी कम्बू एवं जाबिर दोनों सगे भाई हैं। जिला अधिकारी के निर्देश पर प्रयागराज विकास प्राधिकरण के अधिकारी राजकीय जमीन खली कराने के लिए कई थानों की पुलिस बल के साथ रविवार सुबह पहुंचे और दोनों के द्वारा कछारी क्षेत्र में मौजूद राजकीय जमीन पर अवैध कब्जा करके माकान एवं लाज को खाली कराया गया। इससे पूर्व उक्त जमीन को खली करने के लिए नोटिस भी भेजा गया था।

गौरतलब है कि शनिवार को आविद एवं भुट्टो के खिलाफ कार्रवाई की गई। रविवार को भुट्टो की लाज को बुलडोजर लगाकर गिराया गया। रविवार सुबह अतीक के शूटर कम्बू एवं जाबिर के अवैध माकान को खाली कराया गया।

दोनों आरोपित अतीक अहमद के लिए शूटर काम करते थे। दोनों के खिलाफ कुल 17 आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं। लेकिन तीन वर्ष पूर्व अतीक अहमद से रंजिश हो गई। एक हत्या के मामले में दोनों भाई आरोपी बनाए गए। लेकिन सपा की सरकार जाते ही मामले की जांच पुनः कराई गई तो मामला अतीक अहमद और उनके खास गुर्गे आविद का नाम प्रकाश में आया। पुलिस ने सभी अपराधियों की हिस्ट्रीशीट खोली है। गिरफ्तारी के लिए तलाश जारी है।

ध्वस्तीकरण से पहले लाज खाली कराने पहुंची पुलिस

अपर पुलिस अधीक्षक नगर दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि जिला प्रशासन एवं प्रयागराज विकास प्राधिकरण के द्वारा गंगा के कछारी क्षेत्र में राजकीय जमीन बने अवैध अतिक्रमण हटाने का अभियान चलाया जा रहा है। बेरी गांव में चिन्हित अवैध अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई जारी है। पुलिस सुरक्षा के लिए वहां तैनात की गई है।

प्रयागराज पुलिस ने डेढ़ करोड़ की नारकोटिक्स दवाइयां की बरामद

प्रयागराज। खुल्दाबाद थाने की पुलिस ने अतरसुइया थाना क्षेत्र के मीरापुर में स्थित एक गोदाम में छापामार लगभग डेढ़ करोड़ की नारकोटिक्स दवाइयां बरामद किया है। पुलिस बरामदगी विचना के दौरान हुई है। खुल्दाबाद पुलिस ने रविवार शाम अतरसुइया थाना क्षेत्र के मीरापुर निवासी अनुराग गोस्वामी के छापामारा और वहां से लगभग डेढ़ करोड़ की नारकोटिक्स दवाइयां बरामद हुई। पुलिस दवाइयों को कब्जे में लेकर खुल्दाबाद थाने गाड़ी से लोडकर ले जाने की कार्रवाई की जा रही है।

खुल्दाबाद पुलिस के मुताबिक पन्द्रह दिन पूर्व नशीली दवाओं की तस्करी मामले में एक युवक को गिरफतार किया था। उसके कब्जे से लाखों की नशीली दवाओं को बरामद किया था। उक्त मामले की विवेचना के दौरान पुलिस को अहम सुराग हाथ लगते ही रविवार शाम दबिश दी। दबिश के दौरान नारकोटिक्स की दवाइयां बरामद हुई।

उक्त जानकारी देते हुए अपर पुलिस अधीक्षक नगर दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि नशीली दवाओं की तस्करी मामले की विवेचना खुल्दाबाद पुलिस ने रविवार शाम लगभग डेढ़ करोड़ की नारकोटिक्स दवाइयां बरामद की हैं। इस सम्बन्ध में विधिक कार्रवाई की जा रही है।

ऋचा सिंह के खिलाफ थाने में तहरीर

प्रयागराज। पूर्व सांसद अतीक अहमद गैंग के अरशद व राशिद के अतिक्रमण किए गए मकान को ढहाने गई प्रशासन व पीडीए की टीम का विरोध करने पर सपा नेत्री ऋचा सिंह के खिलाफ थाने में तहरीर दी गई है। सरकारी काम में बाधा पहुंचाने के लिए सपा नेत्री व उनके एक दर्जन समर्थकों के खिलाफ तहरीर दी गई है। प्रशासन व पुलिस की टीम का कहना है कि बेली उपरहार में राजकीय आस्थान की जमीन पर अरशद व राशिद ने कब्जा किया था। प्रशासन की टीम अरशद का अवैध निर्माण ढहाने पहुंची। मौके पर पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष व सपा नेत्री ऋचा सिंह पहुंचीं और कार्रवाई का विरोध करने लगीं। धरना देकर प्रशासन की टीम को दो घंटे तक कार्रवाई से रोक दिया। तहसीलदार सदर, कानूनगो और लेखपाल के जरिए थाने में तहरीर दी गई है। साथ ही मकान में रह रहे कुछ लोगों के खिलाफ भी मुकदमा दर्ज करने को तहरीर दी गई है। प्रशासन की टीम अरशद के जिस मकान को ढहाने गई थी उसका आगे का हिस्सा दो मंजिला है। यह निर्माण नया है। जबकि पीछे तीन मंजिला हिस्सा पुराना है। इसमें लॉज भी है। विरोध के बाद टीम ने आगे के मकान का आंशिक हिस्सा गिरा तो दिया लेकिन तब तक अंधेरा हो गया था। पीछे का हिस्सा गिराने के लिए मकान में रहने वालों को दो दिन का समय दिया गया है।

गोदाम का ताला तोड़कर 50 हजार का मोबीआयल चोरी

नैनी। क्षेत्र के चकरघुनाथ में स्थित एक आटो मोबाइल का ताला तोड़कर चोरों ने हजारों का सामान पार कर दिए। सुबह पता चलने पर भुक्तभोगी ने घटना की लिखित सूचना पुलिस को दी। चक रघुनाथ निवासी संगम लाल केशरवानी की मिजार्पुर रोड पर केशरवानी मेडिकल स्टोर के बगल में शनि आटोमोबाइल के नाम से दुकान है। बगल में गोदाम भी है। वहा मोबी आयल का थोक विक्रेता है। बीती रात दुकान के बगल स्थित गोदाम का ताला तोड़कर चोरों ने करीब 50 हजार रुपये का मोबीआयल चोरों ने उड़ा दिए।

रिबोर हुआ ही नही निकल गया पैसा की शिकायत

करछना। विकास खण्ड करछना के हरई गाव मे ग्राम प्रधान और ग्राम पचायत विकास अधिकारी की मिली भगत से गाव के दो लोगो के हैडपंप रिबोर का पैसा निकाल लिया जबकि दोनो का हैडपप रिबोर हुआ ही नही।गाव निवासी जमुना प्रसाद तिवारी व धनीलाल ने हैडपप रिबोर के लिए कई महीने पूर्व प्रधान और बीडीओ से शिकायत की थी लेकिन आज तक दोनों के घर के समीप लगे हैडपप का रिबोर नही हुआ और अब हैंडपप से गंदा पानी और बालू निकल रहा है। भुक्तभोगियो ने बीडीओ करछना से शिकायत करते हुए जांच की मांग की है।

नोडल अधिकारी/प्रमुख सचिव ने कोविड-19 की समीक्षा की

कैंटोनमेंट जोन में शत-प्रतिशत जांच करायी जाये, एल-2 एवं एल-3 में बेड़ों की संख्या बढ़ाने के दिए निर्देश

समीक्षा बैठक करते नोडल अधिकारी

प्रयागराज। नोडल अधिकारी/प्रमुख सचिव वन एवं पर्यावरण सुधीर गर्ग ने संगम सभागार में कोविड-19 की समीक्षा बैठक की। समीक्षा के दौरान नोडल अधिकारी ने डोर-टू-डोर सर्वे की जानकारी लेते हुए इसे और बढ़ाये जाने के निर्देश दिये। तत्पश्चात कैंटोनमेंट जोन/नान कैंटोनमेंट जोन के विभाजन की जानकारी लेते हुए कहा कि कैन्टोनमेंट जोन में शत-प्रतिशत टेस्ट कराये जाये। उन्होंने कांटेक्ट ट्रेसिंग को और बढ़ाये जाने का निर्देश दिया। उन्होंने अस्पताल में भर्ती होने वाले मरीजों की डाटा फीडिंग और उसको सुरक्षित रखने के निर्देश दिये है। होम आइशोलेशन की जानकारी लेते हुए कहा कि मरीजों से कम से कम दो बार बातचीत अवश्य की जाये। इसके साथ ही होम आइशोलेशन में रह रहे मरीजों के परिजनों के पास चिकित्सक का मोबाइल नम्बर आवश्यक रूप से होना चाहिए ताकि कोई परेशानी होने पर तत्काल सम्पर्क कर सके। नोडल अधिकारी ने प्रतिदिन सैम्पलिंग के लक्ष्य की जानकारी लेते हुए उन्होंने यथासम्भव 6000 लोगो की प्रतिदिन जांच कराये जाने के लिए कहा है। उन्होंने इस कार्य में किसी भी प्रकार की शिथिलता न बरतने के भी निर्देश दिये। भर्ती मरीजों की स्थिति की जानकारी ली तथा माइक्रो कैंटोनमेंट जोन के निर्धारण की जानकारी लेते हुए माइक्रो कैंटोनमेंट जोन को और बढ़ाये जाये तथा साफ-सफाई के साथ-साथ सैनेटाइजेशन के कार्य को भी नियमित रूप से कराये जाने के लिए कहा है। नोडल अधिकारी एल-2 और एल-3 के अस्पतालों में बेड़ों की संख्या और बढ़ाये जाने तथा लोगो को कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव हेतु निरंतर जागरूकता अभियान चलाये जाने के लिए कहा है। उन्होंनें रेलवे अस्पताल में कोविड मरीजों के इलाज के सम्बंध में की गयी व्यवस्थाओं के जानकारी लेते हुए कहा कि जो रेलवे कालोनियों है, उसका एक समय निर्धारण करते हुए सभी लोगो की जांच कराये जाने के लिए कहा है। समीक्षा बैठक में जिलाधिकारी भानु चन्द्र गोस्वामी, नगर आयुक्त रवि रंजन, मुख्य विकास अधिकारी-आशीष कुमार, प्राचार्य मेडिकल कालेज एस0पी0 सिंह, मुख्य चिकित्साधिकारी जी0एस0 वाजपेयी सहित सभी सम्बंधित अधिकारी एवं चिकित्सकगण मौजूद थे।

नोडल अधिकारी ने अस्पताल में भर्ती होने वाले मरीजों का शत-प्रतिशत एक्सरे कराये जाने का दिये निर्देश

प्रयागराज। नोडल अधिकारी श्री सुधीर गर्ग रविवार को मेडिकल कालेज में बैठक करते हुए कोविड-19 की समीक्षा की। समीक्षा में उन्होंने अस्पताल में आने वाले मरीजों की जांच कराये जाने एवं एक्सरे किए जाने की स्थिति के बारे में जानकारी ली। उन्होंने शत-प्रतिशत मरीजों का एक्सरे कराये जाने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि जिससे कि मरीज की वास्तविक स्थिति के बारे में जानकारी मिल सके। उन्होंने सी0टी0 स्कैन किए जाने के सम्बंध में जानकारी ली, जिस पर प्राचार्य डॉ0 एस0पी0 सिंह ने बताया कि सीटी स्कैन मरीज की स्थिति को देखते हुए कराया जाता है। नोडल अधिकारी ने कहा कि सरकार के द्वारा जो गाइड लाइन निर्धारित की गयी है, उसका अनुपालन करते हुए मरीजों का और बेहतर से बेहतर इलाज सुनिश्चित किये जाने के लिए कहा है। उन्होंने व्यवस्थाओं की जानकारी लेते हुए कहा कि अस्पताल में सभी आवश्यक व्यवस्थायें चुस्त-दुरूस्त रहे। उन्होंने आईसीयू और आइशोलेशन वाले मरीजों पर विशेष ध्यान देने का निर्देश दिया है। बैठक में जिलाधिकारी श्री भानु चन्द्र गोस्वामी, मुख्य विकास अधिकारी-श्री आशीष कुमार, प्राचार्य मेडिकल कालेज डॉ0 एस0पी0 सिंह, मुख्य चिकित्साधिकारी-श्री जी0एस0 वाजपेयी सहित सभी सम्बंधित अधिकारीगण मौजूद थे।

शहीद-ए-आजम भगत सिंह जी को 114वीं जयंती पर भावपूर्ण स्मरण किया गया

शहीद-ए-आजम भगत सिंह जी को 114वीं जयंती मनाते हुए

प्रयागराज। अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद एवं शहीद-ए-आजम भगत सिंह स्मारक समिति के तत्वाधान में रविवार को प्राप्तः 9 बजे आजाद पार्क कंपनी बाग में शहीद-ए-आजम भगत सिंह जी का 114वां जंयती समारोह श्रद्धा पूर्वक कोविड-19 को ध्यान में रखकर मास्क पहलकर सामाजिक दूरी बनाकर शहीद भगत सिंह के कास्य प्रतिभा पर सम्मानित देशभक्तों ने फूल-माला चढ़ाकर भावपूर्ण स्मरण कर शहीद-ए-आजम भगत सिंह अमर रहें-अमर शहीदों की क्रान्तिकारी परम्परा अमर रहे अमर शहीद चन्द्र शेखर आजाद जी अमर रहें के गगन भेदी नारे लगाये। उक्त अवसर प्रो0 डा0 श्रीबल्लभ मिश्र जी ने कहा कि शहीद-ए-आजम भगत सिंह प्रतिभा और पराक्रम की उत्कृष्टम मिसाल थे। उनका जन्म स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत ह्रायशस्वी पिता सरदार किशन सिंह माँ विद्यावती के पुत्र थे। स्वतंत्रता सग्राम में उनकी भूमिका के लिए अंग्रेजों की जेल में यातनाये मिली उन्होंने कभी भी माफी या पश्चाताप प्रकट नही किया।

अन्य विशिष्टवक्ता संजय कृष्ण श्रीवास्तव वरिष्ठ समाज देवी ने कहा कि संसद में अहिंसक बम विस्फोट केवल भारतीय नौजवानों के लिए ही नही, पुरी दुनियाँ को झकझोर देने वाला कारनामा था। भगत सिंह को उनकी प्रतिभा और पराक्रम की उत्कृष्टता के कारण शहीद-ए-आजम सम्मान से संबोधित किया जाता है।

जयंती की अध्यक्षता करते हुये राजू जायसवाल मरकरी ने कहा की शहीद-ए-आजम भगत सिंह ने कोर्ट में कहा कि अंग्रेजी शासको ने करोड़ों भूखे एवं संघर्षशील लोगों को प्राथमिक अधिकार से वंचित कर दिया गया उनके आर्थिक कल्याण रास्ते बंन्द कर दिये गये है इस कारण गूगे बहरे सरकार को जगाने के लिए सांकेतिक रूप से कम शक्तिशाली बम फेका है। कार्यक्रम का संचालन महासचिव राजबहादुर गुप्ता व धन्यवाद ज्ञापन प्रो0 श्याम बिहारी जायसवाल जी ने किया। प्रमुख रूप से अमन सिंह, महेश त्रिपाठी, विशाल गुप्ता, अतुल राय, निखिल मरकरी, मनीशी मिश्रा, कमान्डो हरीश यादव, तनय मिश्र, अनुभव यादव, शिवम यादव, नितिन मिश्र।

अखण्ड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम कियायोग आश्रम एवं अनुसंधान सस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम

पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं0: UPHIN2001/9025

बारिश से नष्ट फसलों का कृषि विभाग देगा मुआवजा

प्रयागराज। बारिश के कारण पिछले दिनों नष्ट हुई धान की फसलों का मुआवजा कृषि विभाग किसानों को उपलब्ध कराएगा। नष्ट हुई फसलों का सर्वे करने के लिए विभाग की ओर से टीम गठित कर दी गई है। रिपोर्ट के अनुसार किसानों को मुआवजा दिया जाएगा। जिले में एक हजार बीघा से अधिक धान की फसल और 200 बीघा बाजरा की फसल बारिश के कारण नष्ट हो गई है। चार दिन पहले हुई लगातार बारिश के कारण गंगापार और यमुनापार में धान की अगेती फसल बुरी तरह प्रभावित हुई है। बारिश के साथ तेज हवा के कारण धान की फसल खेत में ही गिर गई, जिससे किसान परेशान है। कुछ किसान धान की गिरी फसल मजदूर से बंधवा रहे हैं। जिला कृषि अधिकारी डॉ अश्वनी सिंह ने बताया कि बारिश के कारण जिन किसानों की फसल नष्ट हुई है उनका खसरा खतौनी जमा करके अनुदान दिलाया जाएगा। जिन किसानों ने केसीसी के माध्यम से फसलों का बीमा कराया है, उन्हें प्राथमिकता के साथ अनुदान दिया जाएगा।

पोषण और कोरोना संक्रमण के प्रति जागरूकता प्रचार अभियान शुभारम्भ

प्रयागराज। सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के क्षेत्रीय लोक सम्पर्क ब्यूरो प्रयागराज द्वार पोषण माह के दौरान प्रदेश भर में पौष्टिक आहार को बढ़ावा देने और कोविड-19 के संक्रमण को रोकने लिए दस दिवसीय प्रचार अभियान 28 सितम्बर, 2020 से शुरू किया जा रहा है। प्रथम चरण में उन चार जिलों प्रयागराज, वाराणसी, गोरखपुर व मेरठ को शामिल किया गया है जहां कोरोना संक्रमण के सर्वाधिक मामले सामने आ रहे हैं। इस 10 दिवसीय प्रचार अभियान का शुभारम्भ स्थानीय सांसद श्रीमती केशरी देवी पटेल द्वारा पूर्वाह्न 11.30 बजे से अपने आवास से किया जायेगा। प्रचार अभियान के दौरान प्रभावित जिलों के संवेदनशील इलाकों में सचल जन जागरूकता प्रदर्शनी का आयोजन किया जायेगा। साथ ही सार्वजनिक स्थानों पर लोगों को पोषक आहार के माध्यम से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और कोरोना संक्रमण से बचने के लिए संदेशमूलक बैनर, पोस्टर, हैण्डबिल व स्टैण्डीज लगाए जाएंगे।

प्रादेशिक लोक सम्पर्क ब्यूरो, लखनऊ के संयुक्त निदेशक सुनील कुमार शुक्ल ने बताया है कि अगले चरण में लखनऊ, गाजियाबाद व कानपुर जिलों में सघन प्रचार अभियान चलाया जायेगा। उन्होंने बताया है कि इस प्रचार अभियान में सूचना और प्रसारण मंत्रालय की अन्य मीडिया कार्यालय पीआईबी, आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि को शामिल किया गया है।

मास्क न लगाने वालों पर सख्त हुए डीआईजी व कप्तान

प्रयागराज। अगर आप बिना मास्क के शहर में निकले तो खैर नहीं आपका चालान जरूर कटेगा। पुलिस विभाग के बड़े अफसर डीआईजी के पी सिंह वह कप्तान सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी सड़क पर उतर कर निगरानी करने में जुट गए हैं। शनिवार को देर रात तक चालान काटने का काम चलता रहा। शहर में लगभग दो हजार 44 लोगों का चालान काटा गया। इलाहाबाद हाईकोर्ट सख्ती के बाद मास्क न लगाने वालों के खिलाफ सख्ती की गई है। शनिवार की देर रात डीआईजी के पी सिंह, कप्तान सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी पुलिस फोर्स के साथ रात में भी गश्त करने निकले और माइक लेकर अनाउंस कर लोगों को जागरूक करते रहे आप लोग सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें। साथ-साथ पुलिस विभाग बिना मास्क लगाए लोगों का चालान भी करती रही। पुलिस ने 2044 व्यक्तियों का चालान कर 2,11,800 रुपया वसूल किया। सोशल डिस्टेंसिंग का पालन न होने पर प्रयागराज पुलिस ने कुल 98 व्यक्तियों के खिलाफ जनपद के विभिन्न थानों में 73 मुकदमा दर्ज किया जिसमें 56 व्यक्ति गिरफ्तार किए गए। आरोपियों में विरोध प्रदर्शन करने वाले भी शामिल थे। इस दौरान पुलिस ने 7092 गाडियों की चेकिंग कर 275 वालों का चालान किया। पुलिस की इस कार्यवाही की शहर भर में चचाएं होती रही। शहर में लोग कहते रहे की कोरोना वैश्विक महामारी को लेकर पुलिस विभाग काफी सक्रिय है।

मास्क न लगाने वालों पर कार्रवाई करते हुए

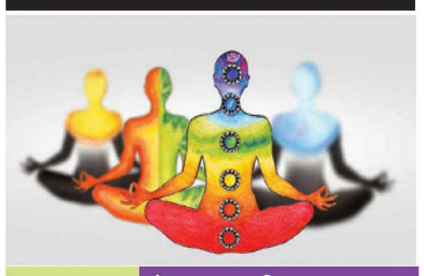

प्रयागराज सोमवार, 28 सितम्बर, 2020

क्रियायोग सन्देश

मानव का आहार

वनस्पतियों से प्राप्त पूर्ण परिपक्व अनाज,फल, सब्जियाँ तथा बीज

मांसाहार : मानव की प्रकृति के विपरीत

आज चिकित्सा विज्ञान ने भी यह प्रमाणित कर दिया है कि मनुष्य स्वभावतः फल तथा अनाज ग्रहण करने वाला प्राणी है। मांसाहार मानव की प्रकृति के विपरीत है। मांसाहार ग्रहण करने पर अनेक प्रकार की शारीरिक और मानसिक बीमारियॉ प्रकट होती हैं। मांसाहार मानव की प्रकृति के विपरीत क्यों है, आइए, कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं के द्वारा समझें-

वैज्ञानिक कारण : दांतों के आकार व बनावट का निरीक्षण

मांसाहारी जन्तुओं से मनुष्य की तुलना करें। मांसाहार जन्तुओं के दाँत की रचना, शिकार पकड़ने, मांस को चबाने आदि के लिए उपयुक्त है। शेर के दाँतों को देखें। इन दाँतों से वह फल तथा अन्न नहीं चबा सकता है लेकिन बड़ी आसानी से वह मांस को नोच-नोच कर खा सकता है। मनुष्य में दांतों की रचना बन्दरों के दांतों की रचना से मेल खाती है। बन्दर का आहार फल व अन्न आदि है जो मनुष्य के आहार से मेल खाता है। मनुष्य के दाँत गाय, भैस, बकरी आदि से मेल नहीं खाते है इसलिए चरने वाले जन्तुओं के आहार मनुष्य के आहार से भिन्न है। मनुष्य के जिन चार दाँतों को केनाइन की संज्ञा दी गयी है वे केवल जबड़ों को ठीक से बंद करने के सहायक दांत हैं। मांसाहारी जानवरों की तरह उपयोग के लिए नहीं हैं ।

मनुष्य की आँखें, कान, नाक, जिह्वा आदि सम्पूर्ण इन्द्रियों की प्रकृति माँसाहार के विपरीत हैं

मांसाहारी जीव जब बकरे आदि को देखते हैं तो उनकी आंखों में चमक आ जाती है। उन्हें जानवरों को मारने में कोई दुःख नहीं होता है। वे प्रसन्नता से जानवरों का वध करके उनके रक्त का पान करते हैं व माँस को खाते हैं। मनुष्यों की आँखें जन्तु वध के दृश्य को नहीं देख पाती हैं इसलिए कसाईखाना को शहर से दूर बनाया जाता है। तृणाहारी जन्तु जैसे बकरी आदि का निरीक्षण करें। हरी घास आदि को देखकर इनकी आँखें चमक उठती हैं इसलिए इन सभी का प्रमुख आहार घास-पात है। वृक्षों में पके हुए फल, अन्न आदि को देखकर मनुष्य की आँखें चमकने लगती हैं तथा फल की सुगन्ध को ग्रहण करके मुँह में पानी भी आने लगता है। इससे भी सिद्ध होता है कि मनुष्य का आहार फल तथा अन्न आदि है। मनुष्य के कान जानवरों को मारने पर उनकी दर्द भरी चीख सुनने में बहुत कष्ट का अनुभव करते हैं। कोई कितना भी माँस का प्रेमी हो परन्तु उसके सामने मुर्गा, बकरा या किसी भी जानवर को मारा जाय तो वह उस दृश्य को नहीं देख पाएगा और उसकी दर्द भरी आवाज़ को उसके कान स्वीकार नहीं करेंगे जबकि मांसाहारी जन्तुओं के सामने किसी और जानवर को मारिए तो वह उसकी दर्द भरी आवाज़ और मारने के दृश्य को देखकर खुश होते हैं।

Vegetarian Diet - The Natural Diet For Humans

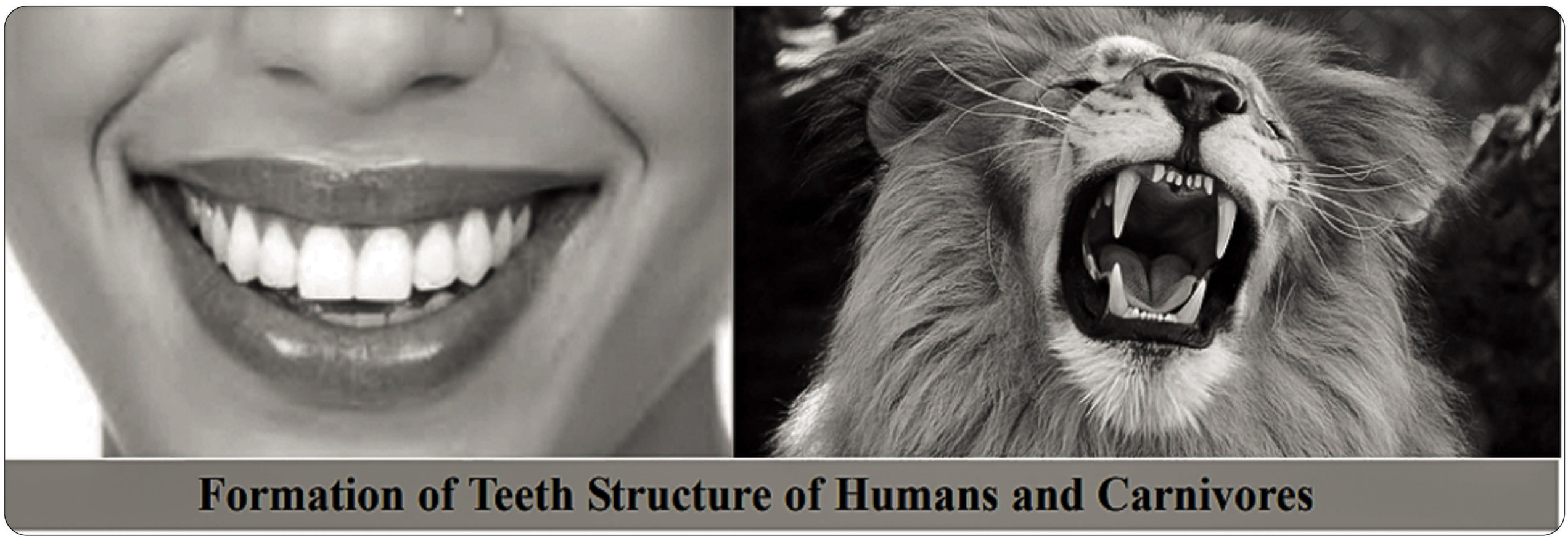

Formation of Teeth Structure of Humans and Carnivores

Another scripture – The Holy Science by Swami Sri Yukteshwar Giri ji, also explains about how humans are naturally suited for the consumption of a vegetarian diet. Under the chapter of "The Procedure", it is stated that to select our natural food, we have to observe the formation of the organs that aid digestion and nutrition, the teeth and digestive canal, the natural tendency of the organs of sense, which guide us to our food and the nourishment of the young.

In summary, it is stated that the formation of the teeth of humans is similar to frugivorous animals or fruit-eating animals. Such animals have teeth of nearly the same height; the canines are a little projected, conical and blunt. Therefore, they are not meant for seizing the prey, but for exertion of strength. The molars are broad-topped and furnished at the top with enamel folds to prevent waste caused by their side motion, but not pointed for tearing flesh. This does not resemble the teeth of the carnivorous, the herbivorous nor the omnivorous animal.